चार्टिस्ट आन्दोलन

1832 में पहली संसदीय सुधार अधिनियम पारित किया गया जिसे ब्रिटेन का आधुनिक मैग्नाकार्टा भी कहा जाता है।

मजदूर ने अपनी हालत में सुधार करने के लिये चार्टिस्ट आन्दोलन आरम्भ किया इनका नेतृत्व फीयर्गस ओकोनर, थामस आटवुड तथा विलियम लोवेट ने किया।

ब्रिटेन के कवि हुड ने अपनी पुस्तक 'सांग ऑफ द शर्ट' एवम् कवयित्री एलिजाबेथ ब्राउनिंग ने अपनी पुस्तक 'क्राई ऑफ चिल्ड्रेन' में इस आन्दोलन द्वारा द्वारा औद्योगिक मशीनों के प्रयोग से उत्पन्न कठिनाइयों एवम् को व्यक्त किया है।

औद्योगिक क्रांति

ब्रिटेन की भौगोलिक स्थिति, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर्याप्त पूंजी, कृषि के क्षेत्र में परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, पर्याप्त उपनिवेश, मध्यमवर्ग का उदय तथा राजकीय संरक्षण एवम् कुशल तथा सस्ते मजदूर ने ब्रिटेन में औद्योगिक क्रान्ति की शुरुआत की।

आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों को औद्योगिक क्रान्ति की संज्ञा दी गई।

जार्ज स्टीफेन्सन ने 1814 में वाष्प-चालित इंजन का आविष्कार किया। 1807 में फुल्टन ने वाष्प चालित नौका का आविष्कार किया।

धर्म सुधार आन्दोलन

इस आन्दोलन ने कैथोलिक चर्च की बुराईयों को उजागर करते हुए प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय चलाया और कैथोलिक चर्च ने आत्म निरीक्षण के लिये प्रति-धर्म सुधार आन्दोलन चलाया।

प्रोटेस्टेण्ट धर्म 1517 में जर्मनी के विटेनबर्ग विश्व-विद्यालय के धर्मशास्त्र के शिक्षक मार्टिन लूथर किंग द्वारा किया गया। मार्टिन ने कैथोलिक धर्म द्वारा बेचे जा रहे पापविमोचन पत्रों (क्षमा पत्रों) के विरुद्ध '95 Theses' प्रस्तुत कर कैथोलिक चर्च की सार्वभौम सत्ता को खुली चुनौती दी। लूथर को सक्सोनी के शासक ने संरक्षण प्रदान किया।

ज्विंग्ली ने 1525 ई में रोम से अलग 'रिफार्म्ड चर्च' की और काल्विन ने स्विट्जरलैंड में नया प्रोटेस्टेंट धर्म 'काल्विनवाद' आरम्भ किया

ब्रिटेन में हेनरी सप्तम ने रोम से इंग्लैंड को चर्च का सम्बन्ध समाप्त कर सम्राट को ब्रिटेन के चर्च का सर्वोच्च अधिकारी घोषित किया यह एंग्लिकन चर्च कहलाया

फ्रांस की क्रान्ति

1789 को फ्रांस के तृतीय स्टेट के प्रतिनिधि सभा भवन पहुँचे जो कि बन्द था अतः टेनिस कोर्ट में अपनी सभा की स्वयं को राष्ट्र का वास्तविक प्रतिनिधि घोषित कियाऔर नये संविधान के निर्माण के लिये नेशनल असेम्बली गठित किया गया। फ्रांस के शासक को मान्यता प्रदान करने के लिये बाध्य किया। यहीं से क्रान्ति की शुरुआत हुई।

क्रान्ति के समय लुई 16 वां फ्रांस का शासक बना जो कि अयोग्य था और उसकी रानी 'मेरी आंतुआनेत' नासमझ थी

'स्टेट्स जनरल' फ्रांस की सर्वोच्च संस्था थी जिसका अधिवेशन 175 वर्षों से नहीं बुलाया गया था

क्रांति के समाज तीन वर्गों में बंटा हुआ था - पादरी, सामंत तथा अन्य। पहले दो वर्गों को विशेषाधिकार प्राप्त था और अन्य को कोई भी अधिकार नहीं था यह कहावत प्रचलित थी कि पादरी पूजा करता है सामन्त युद्ध करता है तथा सामान्य जन्म कर देती है

मॉण्टेस्क्यू ने राज्य के कार्यों को तीन संस्थाओं द्वारा संचालित करने का सुझाव दिया - कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका।

क्रान्ति का स्वरूप समाजवादी रूसो द्वारा स्वतन्त्रता, समानता तथा बन्धुत्व के सिद्धान्त पर हुई। उसका कहना था कि 'जो राजनीतिक व्यवस्था जनता के सहयोग पर आधारित न हो वह सफल नहीं हो सकती।'

REDMI NOTE 7 PRO
48MP DUAL CAMERA
2020/4/30 12:33

सूफी सिलसिला

① सूफियों ने सौंदर्य और संगीत को अधिक महत्व दिया
② गुरु को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग का पथ प्रदर्शक संयमपूर्ण जीवन में आस्था रखते थे।
③ सूफी को परमपद प्राप्त करने से पूर्व दस अवस्थाओं - तौबा, सब्र, फक्र, जुहद, तवक्कुल, वजा, रिजा, शुक्र, खौफ रजा
④ इब्न अरबी ने सूफी जगत में वहदत-उल-वुजूद का सिद्धान्त दिया।

चिश्ती सिलसिला - अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने " " शुरू किया। इन्हें गरीब-ए-नवाज भी कहा जाता है।

⑤ शेख निजामुद्दीन औलिया के प्रमुख शिष्य अमीर खुसरो स्वयं शेख सलीम चिश्ती थे। इन्होंने योग तथा प्राणायाम भी अपनाया

सुहारावर्दी सिलसिला - 1262 में शेख बदरूद्दीन जकारिया ने मुल्तान में मठ बनवाया। इनके सन्तों ने शासकों का संरक्षण स्वीकार किया भौतिक जीवन का पूर्ण परित्याग नहीं किया

कादिरी सम्प्रदाय - भारत में मुहम्मद गौस ने आरम्भ किया। ये संगीत के विरोधी थे हरे रंग की पगड़ी पहनते थे। दाराशिकोह इस सम्प्रदाय को मानता था।

शत्तारी सिलसिला - लोदी काल में आरम्भ हुआ हुमायूँ स्वयं तानसेन इससे प्रभावित थे। आरामदायक जीवन बिताते थे।

नक्शबन्दी सिलसिला - इसकी स्थापना ख्वाजा उबैदुल्ला ने की थी। शेख अहमद सरहिन्दी ने भारत में प्रचार किया इस सिलसिले को संगीत नापसन्द था। वजहत-उल-शुद का प्रतिपादन

फिरदौसी सिलसिला - इसका कार्य क्षेत्र बिहार में था।

...) आदि समाचार पत्रों का प्रकाशन
...र दर्पण (साप्ताहिक), दिग्दर्शन
...) आदि समाचार पत्रों का प्रकाशन
...या गया था। इन सभी द्वारा रचित
...दुधाय चन्द्र घोष की जीवनी है।
...क के लेखक कैथरीन मेयो थी।
...ने आनन्द मठ, मधुसूदन दास
...रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गीता तथा
...ने द ब्रोकेन विंग की रचना की

...चार पत्रों को सीधे नियंत्रण में लेने
...महोदय ने देशी भाषा समाचार पत्र
...म्यूलेशन ऐक्ट) को लागू किया।
...इस समाचार पत्र सोमप्रकाश को
...गया था। मोतीलाल घोष ने अपने
...चार पत्र को इस प्रेस एक्ट के प्रभाव
...इस समाचार पत्र को अंग्रेजी भाषा
...दिया। इस अधिनियम के लागू होने
...द्वारा न्यायालय में अपील करने का
...हो गया। इस कानून का विरोध
...प्रेस की जमानत रद्द हो सकती
...पत्रों द्वारा सरकार विरोधी सामग्री
...बिना मजिस्ट्रेट द्वारा इससे बाण्ड
...कराया जाता था अन्यथा जमानत
...।

...एक्ट 1910 ई. पंजीकरण एवं
...कार से संबंधित था। समाचार
...दिग्दर्शन के पास अपील की जा
...ई. में इसे समाप्त कर दिया गया
...प्रेस इमरजेंसी एक्ट 1931 ई.
...पुनः लागू किया गया। 1932 ई.
...बंगेट एक्ट इसी का विस्तारित रूप
...क तथा मुद्रण स्थल का नाम
...पुस्तकों पर देने की अनिवार्यता
...करण अधिनियम के तहत की गई

...ल जो हिन्दू पैट्रियाट के सम्पादक
...कविता का राजकुमार कहा जाता
...का नाथ टैगोर ने ओडियन
...न कला
...किया था।

शिक्षा का विकास

403. (a) लार्ड डलहौजी के शासन काल में चार्ल्स वुड की अध्यक्षता में एक शिक्षा समिति का गठन 1854 ई. में हुआ था। इस शिक्षा समिति द्वारा पारित प्रस्ताव में स्त्री शिक्षा, देशी भाषाओं के विकास, उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना आदि था जिस कारण इसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। 1882 ई. में रिपन ने विलियम हंटर के नेतृत्व में 1854 ई. के बाद शिक्षा के क्षेत्र में हुए विकास के अध्ययन के लिए हंटर आयोग का गठन किया जिसने प्राथमिक अथवा उच्चतर शिक्षा एवं शिक्षण संस्थाओं से संबंध के लिए सिफारिश किया।

404. (b) शिक्षा के क्षेत्र में अधोमुखी निस्पंदन सिद्धान्त का प्रतिपादन मूल रूप से उच्च वर्गों को शिक्षित कर शिक्षा को स्वतः जन-जन तक (निम्न वर्गों) छन-छन कर पहुँचाना था। प्रो. डी. के. कर्वे स्त्री शिक्षा से जुड़े थे। उनके प्रयासों के फलस्वरूप ही 1906 ई. में बम्बई में भारतीय महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। उन्होंने 1899 ई. में पूना में एक विधवा आश्रम की स्थापना की थी।

405. (a)

406. (a) वारेन हेस्टिंग्स महोदय ने सर्वप्रथम 1781 ई. में कलकत्ता मदरसा की स्थापना फारसी एवं अरबी विषयों के अध्ययन हेतु की थी। यह मदरसा मूलतः मुस्लिम कानून से सम्बद्ध विषयों से संबंधित था। 1817 ई. में डेविड हेयर के सहयोग से राजाराम मोहन राय ने हिन्दू कॉलेज की स्थापना की थी।

407. (a) लार्ड मैकाले ने भारतीय भाषा साहित्य की आलोचना करते हुए अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का उपर्युक्त माध्यम माना तथा कहा कि यूरोपीय ज्ञान श्रेष्ठतर है। उनके अनुसार, 'समस्त अरबी और भारतीय साहित्य से अधिक मूल्यवान यूरोपीय पुस्तकालय की अलमारी का एक तख्ता है'। मैकाले शारीरिक रूप से भारतीय तथा बौद्धिक रूप से अंग्रेजों का एक समुदाय बनाना चाहता था।

408. (c) गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन के समय से भारत में शिक्षा महानिदेशक की नियुक्ति प्रारंभ हुई थी। एल. ...रिन्ज प्रथम व्यक्ति थे जिनकी नियुक्ति शिक्षा महानिदेशक के पद पर हुई।

409. (a) लार्ड कार्नवालिस को भारतीय लोक ...
जनक माना जाता है क्योंकि उन्होंने ही ...
भारतीय लोक सेवा का गठन किया था। इ...
सेवा) इस्पात का चौखटा भी कहा जाता ...
ऑकलैण्ड को शिक्षा के अधोमुखी निस्पंद...
का प्रवर्तक माना जाता है। मैकाले द्वारा भी ...
पर कार्य किया गया था। 1902 ई. में ...
की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग ...
कर्जन द्वारा की गई थी।

410. (b) सर्वप्रथम 1813 के चार्टर एक्ट में ग...
को यह अधिकार दिया गया कि वह एक...
'भारतीय साहित्य के पुनरूद्धार एवं विक...
विद्वानों को प्रोत्साहन देने के लिए तथा ...
में विज्ञान की उन्नति के लिए व्यय क...

411. (d) चार्ल्स वुड की सिफारिशों में उपरो...
शामिल थे।

412. (b) गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली ने ...
फोर्ट विलियम कालेज (कलकत्ता) ...
थी। इसका उद्देश्य गैर-सैनिक अधिक...
प्रदान करना था।

413. (d) गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक ...
शिक्षा के लिए दस सदस्यों की सामा...
की गई थी। यह समिति दो दलों ...
दल प्राच्य विद्या अरबी, संस्कृत आदि ...
रहा था जिसके मुख्य प्रिसेंप और ...
तथा दूसरा दल पाश्चात्य शिक्षा अ...
दे रहा था जिसके सदस्यों में मुनरो ...
बाद में बैंटिक ने प्राच्य-पाश्चात्य ...
को देखते हुए विधि सदस्य लार्ड ...
समिति का प्रधान नियुक्त किया। ...
1835 ई. को अपने 'मैकाले माइन...
एवं साहित्य की प्रशंसा की।

414. (c) सर विलियम जोन्स ने प्राची...
और संस्कृति के अध्ययन को प्रो...
1778 ई. में एशियाटिक सोसाय...
स्थापना की थी। डंकन महोद...
वाराणसी में हिन्दू कालेज और ...
...स्कृत कालेज की स्था...
के समय ...

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2020/4/2 12:36

409. (a) लार्ड कार्नवालिस को भारतीय लोक सेवा का जनक माना जाता है क्योंकि उन्होंने ही सर्वप्रथम भारतीय लोक सेवा का गठन किया था। इसे (लोक सेवा) इस्पात का चौखटा भी कहा जाता है। लार्ड ऑकलैण्ड को शिक्षा के अधोमुखी निस्पंदन सिद्धान्त का प्रवर्तक माना जाता है। मैकाले द्वारा भी इस नीति पर कार्य किया गया था। 1902 ई. में थामस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना कर्जन द्वारा की गई थी।

410. (b) सर्वप्रथम 1813 के चार्टर एक्ट में गवर्नर जनरल को यह अधिकार दिया गया कि वह एक लाख रुपये 'भारतीय साहित्य के पुनरूद्धार एवं विकास, स्थानीय विद्वानों को प्रोत्साहन देने के लिए तथा आंग्ल प्रदेश में विज्ञान की उन्नति के लिए व्यय करें'।

411. (d) चार्ल्स वुड की सिफारिशों में उपरोक्त सभी तथ्य शामिल थे।

412. (b) गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली ने 1800 ई. में फोर्ट विलियम कालेज (कलकत्ता) की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य गैर-सैनिक अधिकारियों को शिक्षा प्रदान करना था।

413. (d) गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक के समय लोक शिक्षा के लिए दस सदस्यों की सामान्य समिति गठित की गई थी। यह समिति दो दलों में बँटी थी एक दल प्राच्य विद्या अरबी, संस्कृत आदि का समर्थन कर रहा था जिसके मुख्य प्रिसेंप और विल्सन महोदय थे तथा दूसरा दल पाश्चात्य शिक्षा अंग्रेजी को समर्थन दे रहा था जिसके सदस्यों में मुनरो, एलफिन्स्टन थे। बाद में बैंटिक ने प्राच्य-पाश्चात्य विवाद की उग्रता को देखते हुए विधि सदस्य लार्ड मैकाले को शिक्षा समिति का प्रधान नियुक्त किया। जिसने 2 फरवरी, 1835 ई. को अपने 'मैकाले माइन्यूट' में आंग्ल भाषा एवं साहित्य की प्रशंसा की।

414. (c) सर विलियम जोन्स ने प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए 1778 ई. में एशियॉटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की थी। डंकन महोदय ने 1791 ई. में वाराणसी में हिन्दू कानून और दर्शन के अध्ययन हेतू संस्कृत कालेज की स्थापना की थी। कर्जन के समय उच्चतम शिक्षा और अधिकारियों का एक सम्मेलन 1901 ई. शिमला में आयोजित हुआ था। इस सम्मेलन में पारित प्रस्ताव को शिमला प्रस्ताव कहा जाता है। डेविड हेयर ने 1820 ई. में कलकत्ता में बिशप कालेज की स्थापना की थी।

415. (d) 1937 ई. में वर्धा में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन में गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा की अवधारणा प्रस्तुत की थी। इन्होंने व्यवसायिक शिक्षा पर भी जोर दिया था।

416. (b)

चार्टर एक्ट 1858, 1861, 1892 तथा इसके अधीन भारत में ईस्ट इण्डिया कंपनी के गवर्नर जनरल (वायसराय), (लार्ड कैनिंग से लार्ड हार्डिंग द्वितीय तक), ब्रिटिश शासन का विरोध

417. (d) भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम 1857 ई. के पश्चात् भारत में कम्पनी का दोषपूर्ण शासन उजागर हुआ और इस ओर ब्रिटिश जनमानस का भी ध्यान आकृष्ट हुआ। इसी समय ब्रिटेन में पामर्स्टन प्रधानमंत्री बने थे। उन्होंने भारत में कम्पनी की शासन के विफलता को देखते हुए भारत पर शासन करने का अधिकार ब्रिटिश क्राउन के अधीन करने का निर्णय लिया जिसके लिए 1858 का अधिनियम पारित किया गया जिसका विरोध कम्पनी के तत्कालीन अध्यक्ष रोस मेगल्स तथा जॉन स्टुअर्ट मिल ने किया।

418. (d) ऊपर वर्णित सभी कथन 1858 के अधिनियम के प्रावधानों के संदर्भ में सत्य है। इस अधिनियम के तहत बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर एवं बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल के समस्त अधिकार भारत सचिव (Secretary of State for India) को सौंप दिये गये। भारत सचिव ब्रिटिश मंत्रिमण्डल का एक सदस्य होता था, जिसकी सहायता के लिए 15 सदस्यीय भारतीय परिषद् का गठन किया गया। इस परिषद् में 7 सदस्यों की नियुक्ति बोर्ड ऑफ डायरेक्टर एवं शेष 8 की नियुक्ति ब्रिटिश सरकार करती थी। तत्कालीन वायसराय लार्ड कैनिंग ने 1 नवम्बर, 1858 ई. को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में महारानी के नाम से एक घोषणा पत्र जारी किया। इसमें भारतीय शासकों के साथ ईस्ट इण्डिया

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2020/4/2 12:35

कम्पनी द्वारा की गई संधियों एवं पाबन्दियों को संपुष्ट किया गया। देशी शासकों के अधिकारों, प्रतिष्ठा एवं सम्मान का आदर करने का वचन दिया गया। इसी घोषणा में सरकारी नौकरी का आधार योग्यता माना गया।

419. (c) 1858 के अधिनियम के तहत देशी राजाओं का अंग्रेजी क्राउन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित हो गया और डलहौजी की हड़प नीति निष्प्रभावी हो गयी। इस अधिनियम के ही तहत 1784 ई. के पिट्स इण्डिया एक्ट के तहत भारत में लागू की गई शासन की द्वैध व्यवस्था पूरी तरह समाप्त कर दी गई। शासन की द्वैध प्रणाली, एक कम्पनी द्वारा और इसकी संसदीय बोर्ड द्वारा बना दी गयी।

420. (d)

421. (d) ऊपर वर्णित सभी कथन 1861 ई. के भारतीय परिषद् अधिनियम के संदर्भ में सत्य हैं। इस अधिनियम के तहत भारतीयों के असन्तोष में वृद्धि हुई तथा भारतीय जनता को वास्तविक प्रतिनिधित्व नहीं प्राप्त हो सका और विधान परिषद् के अधिकार अत्यन्त सीमित हो गये। विधान परिषद् का कार्य केवल कानून बनाने का था इसे प्रशासन अथवा वित्त अथवा प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं था।

422. (c)

423. (c) भारत परिषद् अधिनियम 1861 ई. के तहत भारत में लेजिस्लेटिव काउन्सिल की स्थापना की गई। इसी एक्ट के द्वारा भारत के गवर्नर जनरल को अध्यादेश जारी करने की शक्ति प्रदान की गई।

424. (c) भारत परिषद् अधिनियम 1892 ई. के तहत गवर्नर जनरल को संकटकालीन अवस्था में विधान परिषद् की अनुमति के बिना ही अध्यादेश जारी करने की अनुमति मिल गई जो 6 माह तक लागू रह सकता था। इसके साथ ही इस अधिनियम ने पहली बार विधान परिषद् में बजट पर बहस करने का अधिकार प्रदान किया, मत विभाजन का नहीं।

425. (d) भारतीय परिषद् अधिनियम 1892 के तहत एक ओर जहाँ भारत में संसदीय प्रणाली का रास्ता साफ हुआ तथा भारतीयों को कौंसिल में अधिक स्थान मिला वहीं दूसरी ओर चुनाव पद्धति एवं गैर-सदस्यों की संख्या में वृद्धि ने असन्तोष का माहौल पैदा किया। अंग्रेजी भारत में मुसलमान, सिक्ख तथा इसाई को अल्पसंख्यक वर्ग में रखा गया परन्तु 1892 ई. के मैकडोनाल्ड पंचाट के द्वारा बनाए गए नए कानून के अनुसार, अनुसूचित जातियों को हिन्दू समाज से अलग कर विधान मण्डलों में कुछ सीटें आरक्षित कर दिया गया। इस पंचाट के तहत बौद्धों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था नहीं की गई।

426. (b) लार्ड कैनिंग ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारत के अन्तिम गवर्नर जनरल तथा ब्रिटिश भारत की सत्ता ताज के अन्तर्गत 1858 ई. एक्ट के तहत लाए जाने के पश्चात् प्रथम वायसराय तथा गवर्नर जनरल थे।

427. (c) गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के शासन काल में 1857 ई. का विप्लव हुआ था। इसी ने 1 नवम्बर, 1858 ई. को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) के मिण्टो पार्क में अंग्रेजी दरबार में महारानी विक्टोरिया का घोषणापत्र पढ़ा था जिसे भारतीय जनता का अधिकार-पत्र 'मैग्नाकार्टा' कहा गया।

428. (d) भारत के प्रथम वायसराय लार्ड कैनिंग के समय ही कुख्यात विलय या व्यपगत के सिद्धान्त को अधिकारिक तौर पर 1859 ई. में वापस ले लिया गया। इसी के कार्यकाल में भारतीय दण्ड संहिता (Indian Penal Code 1859), दण्ड व्यवहार-संहिता (Code of Criminal Procedure 1859) और भारतीय उच्च-न्यायालय अधिनियम (Indian High Court Act 1861) पारित किया गया। इस एक्ट के द्वारा बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना हुई।

429. (c) लार्ड मैकाले के दण्ड विधान, जाब्ता फौजदारी, जाब्ता दीवानी को अन्तिम रूप से 1860 ई. में कैनिंग के कार्यकाल में स्वीकार किया गया। इसके अतिरिक्त लार्ड कैनिंग ने 1857 के विप्लव को ध्यान में रखकर भारतीय सैनिकों की संख्या घटाते हुए उनके हाथों से तोपखाने के अधिकार को छीन लिया। साथ में आर्थिक सुधारों के तहत उसने ब्रिटिश अर्थमंत्री विल्सन को भारत बुलाया जिसने ₹ 500 से अधिक आय पर आयकर लगा दिये।

430. (b) लार्ड कैनिंग ने सामाजिक सुधारों के तहत विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 ई. में पारित किया। साथ में सार्वजनिक सुधारों के तहत उसने रेल लाइनों, सड़कों व नहरों का निर्माण करवाया। इसके शासनकाल में हुए अन्य कार्य थे—नमक कर

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2020/4/2 12:37

फ्रांसीसी क्रांति के समय अर्थशास्त्री (फिजियोक्रेट) ने 'लैसेज फेयर' अहस्तक्षेप की नीति का प्रतिपादन किया जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सम्पत्ति की रक्षा करने और हस्तान्तरित करने का पूरा अधिकार था। यह विचार सामन्तशाही के विशेषाधिकार के विरुद्ध था।

विश्वकोष (Encyclopedia) में उस वक्त की सामाजिक बुराईयों का वर्णन था।

तृतीय स्टेट के प्रतिनिधियों द्वारा टेनिस कोर्ट में 20 जून 1789 को सभा करने तथा संविधान के गठन की शपथ से लेकर अगस्त 1792 ई. में क्रान्ति के अनुदारवादियों के हाथों में चले जाने तक फ्रांस का शासन नेशनल असेम्बली द्वारा ही संचालित हुआ। यही क्रान्ति का प्रथम चरण था।

14 जुलाई 1789 ई को शस्त्रागार पर जनता ने धावा बोला जिसे इतिहास में बास्तील की घटना कहा जाता है।

21 सितम्बर 1792 ई को फ्रांस को गणराज्य घोषित कर दिया गया। फ्रांस के पूर्व शासक 16वें पर मुकदमा चलाकर फांसी की सजा दी गई।

जैकोबिन ने रोबसपियर के नेतृत्व में अपनी सत्ता स्थापित की। जैकोबिन का अर्थ आतंकवाद होता है। 'डायरेक्टरी' के जनता के वक्त असंतोष से डरकर नेपोलियन बोनापार्ट को आमंत्रित किया।

फ्रांसीसी क्रान्ति में स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व (बंधुत्व) वाक्य दिये।

26 अगस्त 1789 को मताधिकार स्वयं योग्यता के आधार पर नियुक्ति

REDMI NOTE 7 PRO
48MP DUAL CAMERA
2020/4/30 12:33

467. (b) लार्ड कर्जन ने अपने सैनिक सुधारों के अन्तर्गत अंग्रेजी सेनापति किचनर के सहयोग से सेना का पुनर्गठन किया। भारतीय सेना को उत्तरी तथा दक्षिणी कमानों में बाँटा गया। उत्तरी कमान का कार्यालय मरी में तथा प्रहार केन्द्र पेशावर में एवं दक्षिणी कमान का कार्यालय पूना में एवं प्रहार केन्द्र क्वेटा में रखा गया। सैन्य अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए क्वेटा में एक कॉलेज की स्थापना की गई तथा तत्कालीन सैन्य टुकड़ियों को एक महत्त्वपूर्ण परीक्षण किचनर परीक्षण से गुजरना पड़ता था। लार्ड किचनर का भारत के सैन्य प्रमुख के पद पर नियुक्त होने के पश्चात् कर्जन से मतभेद होने के कारण 1905 ई. में कर्जन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

468. (a) लार्ड कर्जन ने 1905 ई. में राष्ट्रीय आंदोलन को दबाने व कमजोर करने के उद्देश्य से प्रशासनिक असुविधाओं का आरोप लगाकर बंगाल को दो भागों में बाँट दिया। पूर्वी भाग में बंगाल और असम के चटगाँव, ढाका, राजशाही को मिलाकर एक नया प्रान्त बनाया गया तथा इस नये प्रांत का मुख्यालय ढाका में रखा गया। जबकि पश्चिमी भाग व पश्चिमी बंगाल में बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा को सम्मिलित किया गया। कर्जन का यह विभाजन 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर आधारित था। उसने विभाजन के द्वारा हिन्दू-मुसलमानों में मतभेद पैदा करने का प्रयत्न किया। लेकिन इस विभाजन के विरोध में स्वदेशी आन्दोलन हुआ तथा इतनी आवाजें उठीं की 1911 ई. में विभाजन को समाप्त कर दिया गया। बंगाल विभाजन के विरोध में समूचे बंगाल में 16 अक्टूबर, 1905 ई. को स्वदेशी आन्दोलन की शुरुआत हुई। इस दौरान बंदे मातरम गीत अत्यधिक प्रसिद्ध हो गया। ज्ञातव्य हो, कि बंदे मातरम का सर्वप्रथम गायन कांग्रेस के मंच से 1896 ई. में कोलकत्ता अधिवेशन में किया गया। इसके रचनाकर बंकिम चन्द्र चटर्जी हैं, जिसका उल्लेख उनकी उपन्यास आनन्दमठ में है। 16 अक्टूबर, 1905 ई. को स्वदेशी तथा बहिष्कार आन्दोलन को सम्पूर्ण भारत में चलाने का कार्य लाला राजपत राय, तिलक, अरविन्द घोष आदि नेताओं ने किया। लेकिन इसमें स्वदेश बांधन समिति के संस्थापक, अश्विनी कुमार दत्त का महत्त्वपूर्ण योगदान था। स्वदेशी आन्दोलन का दिल्ली में [illegible] किया था। बंगाल विभाजन के विरोध में हुए प्रारम्भिक आन्दोलन का नेतृत्व सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने किया था।

469. (a) भारत में कर्जन के नीतियों के समर्थक फ्रेजर ने कर्जन के विषय में कहा है, कि 'भारत में राष्ट्रीयता का प्रारम्भ कर्जन ने ही किया था'। गोपाल कृष्ण गोखले ने कर्जन की तुलना मुगल सम्राट औरंगजेब से की है। लाला लाजपत राय ने कर्जन के संदर्भ में कहा है, कि 'भारत स्वराज्य एवं स्वतंत्रता चाहता था, कर्जन इस बंधन के काल को बढ़ाना चाहता था, हम दृढ़ तथा स्वावलम्बी बनना चाहते थे, वह चाहता था कि हम नम्र तथा अधिकृत बने रहें'। दूसरी तरफ लार्ड कर्जन ने कहा था कि 'कांग्रेस गिरने के लिए लड़खड़ा रही है और भारत में रहते हुए मेरी एक विशेष महत्त्वाकांक्षा है, कि इसके शान्तिपूर्ण अवसान में इसकी सहायता करूँ'।

470. (b) गवर्नर जनरल तथा वायसराय लार्ड मिन्टो के कार्यकाल में ही उग्रवादी, आतंकवादी तथा क्रांतिकारी गतिविधियों का उदय हुआ था। इन गतिविधियों को प्रतिबन्धित करने के लिए अध्यादेश, समाचार-पत्र अधिनियम 1908, विस्फोटक पदार्थ अधिनियम आदि पारित किये गये। इस तरह 1908 ई. को एक काले वर्ष की संज्ञा दी जाती है क्योंकि इस वर्ष बहुत से दमनात्मक कानून पास किये गये।

471. (d) लार्ड मिन्टो द्वितीय के कार्यकाल में घटित होने वाली प्रमुख घटनाएँ निम्न हैं—1906 ई. में मुस्लिम लीग का गठन, खुदीराम बोस को फाँसी की सजा, 1907 ई. में लाला लाजपत राय तथा अजीत सिंह को देश से निष्कासित करके बर्मा के मांडले जेल में डाल दिया गया। 1907 ई. में ही उग्रवादी दल के सात नेताओं—विपिनचन्द्र पाल, अश्विनी कुमार दत्त और पाँच अन्य को देश से निष्कासित किया गया। 1908 ई. को बाल गंगाधर तिलक को छः वर्ष के लिए कारावास की सजा दी गयी, वाइसराय की कार्यकारी परिषद् में पहली बार एस. पी. सिन्हा के रूप में एक भारतीय सदस्य को नियुक्त किया गया।

472. (a) जब मिन्टो द्वितीय 1905 ई. में भारत का वायसराय बनकर आया तब उसके समय का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य भारत सचिव मॉरले के सहयोग से लाया गया भारतीय परिषद् एक्ट 1909 ई. व मिन्टो-मॉरले सुधार था। इसे 1909 ई. का संवैधानिक सुधार भी कहा

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2020/4/2 12:38

रवादी रिपन शिक्षा में व्यापक रूप से सुधार
विलियम हण्टर के नेतृत्व में एक आयोग
न किया जिसने 1882 ई. में अपनी रिपोर्ट
ईस्ट इण्डिया की सरकार को सौंपी। रिपोर्ट में
तथा माध्यमिक स्कूली शिक्षा की उपेक्षा की
ही गई। इस रिपोर्ट में यह व्यवस्था की गई
ामिक स्तर की शिक्षा का अधिकार लोकल
एवं म्यूनिसिपल बोर्डों को दिया जाय तथा
संस्थाओं पर से सरकारी नियंत्रण को हटा दिया

र्ड रिपन के गौरवपूर्ण शासनकाल का अन्त
बिल विवाद के साथ हुआ। इस बिल के
ारम्भ में यह व्यवस्था थी कि जाति-भेद पर
त प्रत्येक नागरिक के मध्य उपजे भेदभाव को
किया जाय। इस बिल में भारतीय न्यायाधीशों
ोपीय मुकदमों को सुनने का अधिकार दिया
स बिल का यूरोपीय लोगों, विशेषत: भारत के
समुदाय द्वारा कटु आलोचना की गई। अन्तत:
समुदाय के दबाव में बिल को संशोधित
गया। संशोधन के पश्चात् इस अधिनियम में
वस्था की गई कि भारतीय न्यायाधीश यूरोपीय
ीश के सहयोग से मुकदमों का निर्णय करेंगे।
धेयक के विरोध में अंग्रेजों द्वारा किये गये
को श्वेत विद्रोह की संज्ञा दी जाती है।

ार्ड विलियम बैंटिक के शासनकाल में
सन के आधार पर मैसूर राज्य को ब्रिटिश
य में मिला लिया गया था, परन्तु लार्ड रिपन ने
य इतिहास में एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए
पुराने शासक राजवंश को पचास वर्ष पश्चात्
वापस कर दिया। इसके इन्हीं सभी कृत्यों
ए भारतीय लोग इसे सज्जन रिपन के रूप में
करते हैं तथा इसके शासनकाल को भारत में
ुग का आरम्भ माना जाता है।

ण्डियन काउन्सिल एक्ट 1892 ई. का पारित होना
बहुत महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाती है। इस एक्ट
ाध्यम से भारतीय संविधान निर्माण की दिशा में

पहला कदम उठाया गया अर्थात् इसे भारतीय संविधान निर्माण की दिशा में पहला चरण माना जाता है। इस अधिनियम को भारतीयों में बढ़ते असंतोष के कारण पारित किया गया जिसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी स्थापना के साथ ही व्यक्त करना प्रारम्भ कर दिया था। इस एक्ट के तहत केन्द्रीय तथा प्रान्तीय कौंसिल में भारतीयों की संख्या में वृद्धि की गई।

456. (a) साम्राज्यवादी प्रकृति के गवर्नर जनरल लार्ड लैन्सडाउन के काल में सर (डूरण्ड) को अफगानिस्तान भेजा गया, जिनके प्रयासों के फलस्वरूप भारत तथा अफगानिस्तान के मध्य सीमा रेखा खींची गई, जिसे डूरण्ड लाइन के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त लैन्सडाउन के ही कार्यकाल में 1891 ई. में दूसरा फैक्ट्री एक्ट लाया गया। इसमें स्त्रियों के 11 घंटे प्रतिदिन से अधिक कार्य करने को प्रतिबंधित कर दिया गया।

457. (d) वाइसराय तथा गवर्नर जनरल एल्गिन द्वितीय के शासनकाल में 1896-97 ई. में भारत का अधिकांश भाग एक भयंकर अकाल की चपेट में आ गया था। इस अकाल के उपरान्त अकाल के कारणों की जांच के लिए लायल आयोग का गठन किया गया।

458. (c)

459. (c) लार्ड कर्जन भारत के प्रति ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों का नग्न प्रतीक था। उसने सीमान्त कबाइली जातियों के विद्रोहों के कारण संतुष्टीकरण की नीति का अनुसरण तथा उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त का गठन किया। कर्जन ने तिब्बत में रूसी विस्तारवाद की योजनाओं को विफल करने के लिए एक सैनिक अभियान कर्नल यंग हस्बैंड के नेतृत्व में भेजा, जो ल्हासा तक आगे बढ़ गया। इस अभियान के पश्चात् तिब्बत पर युद्ध के हर्जाने के रूप में तिब्बती प्रदेश चुम्बी घाटी पर 75 वर्षों के लिए अंग्रेजी हुकूमत द्वारा अधिकार कर लिया गया।

460. (b) लार्ड कर्जन ने सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य की पुलिस व्यवस्था की जाँच हेतु सर एन्ड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में एक पुलिस आयोग का गठन किया। इस आयोग ने पुलिस बल को कुशलता या सक्षमता से बहुत दूर, प्रशिक्षण एवं संगठन कोट दोषपूर्ण, भ्रष्ट एवं दमनपूर्ण बताया। साथ में आयोग ने समस्त ब्रिटिश प्रान्तों में पुलिस बल की संख्या तथा उनके वेतन में वृद्धि करने एवं केन्द्र तथा प्रान्तों में अपराध गुप्तचर विभाग की स्थापना करने का सुझाव दिया।

461. (c) लार्ड कर्जन ने शैक्षिक सुधारों के अन्तर्गत 1902 ई. में सर टामस रैले की अध्यक्षता में एक विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया। इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया जिसके तहत विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण बढ़ा दिया गया तथा सीनेट में मनोनीत सदस्यों की संख्या में वृद्धि कर दी गयी। साथ में गैर-सरकारी कालेजों का विश्वविद्यालयों से सम्बन्धित होना अत्यधिक कठिन बना दिया गया।

462. (d) लार्ड कर्जन के कार्यकाल में 1904 ई. में भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, परीक्षण एवं पुनरुद्धार के लिए प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम 1904 पारित किया गया तथा भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना की गई।

463. (c) लार्ड कर्जन ने अपने आर्थिक सुधारों के तहत अकाल एवं सूखे की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए सर एण्टनी मैकडॉनल की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन किया। आयोग ने कृषि में विस्तार का सुझाव दिया। कृषि एवं पशुधन के विकास एवं कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक तरीकों को प्रचलित करने के लिए केन्द्रीय कृषि विभाग की स्थापना की गई थी।

464. (d)

465. (b) लार्ड कर्जन के कार्यकाल में 1899 ई. में भारत टंकण व पत्र-मुद्रण अधिनियम पारित किया गया जिसके तहत अंग्रेजी पौण्ड को भारत में विधिग्राह्य बना दिया गया। साथ में एक अन्य योजना स्वर्ण विनिमय प्रमाण योजना पारित की गयी जिसके तहत सरकार को सोने के बदले रुपये देने होते थे।

466. (a) गवर्नर जनरल तथा वायसराय लार्ड कर्जन के काल में भारतीय रेलवे के विकास के क्षेत्र में सर्वाधिक रेलवे लाइन का निर्माण हुआ तथा रेलवे के विकास हेतु रेलवे बोर्ड का गठन किया गया। इसी समय इंग्लैण्ड से रेल विशेषज्ञ राबर्ट्सन को भारत बुलाया गया। राबर्ट्सन ने वाणिज्य उपक्रम के आधार पर रेल लाइनों के विकास पर बल दिया।

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2020/4/2 12:37

में वृद्धि तथा तम्बाकू पर कर का आरोपण। कैनिंग के समय ही बंगाल में नील कृषकों का विद्रोह एवं श्वेत विद्रोह हुआ था।

431. (b) भारत के गर्वरन जनरल तथा वायसराय लार्ड एल्गिन के शासनकाल में भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रदेश में उग्र बहावी आन्दोलन हुआ था। बहावी मुसलमानों का एक धर्मान्धतापूर्ण सम्प्रदाय था। एक लम्बी तथा कठिन कार्यवाही के पश्चात् बहावी आन्दोलन को दबाया जा सका। एल्गिन के ही काल में सर्वोच्च एवं सदर न्यायालयों को उच्च न्यायालय के साथ शामिल कर दिया गया।

432. (b)

433. (d) ऊपर वर्णित सभी घटनाएँ सर जॉन लारेंस के कार्यकाल में घटित हुई थीं। इसके साथ ही इसके काल की महत्त्वपूर्ण घटना 1865 ई. में भूटानियों के साथ अंग्रेजी हुकूमत का युद्ध है। साथ ही लारेंस ने अफगानिस्तान के सन्दर्भ में अहस्तक्षेप की नीति का पालन किया।

434. (c)

435. (b) लार्ड मेयो ने भारत में वित्तीय विकेन्द्रीकरण की शुरूआत की थी तथा साथ में प्रान्तीय बन्दोबस्त की व्यवस्था की थी। इसने भारतीय राजाओं के पुत्रों की उचित शिक्षा के लिए अजमेर में मेयो कालेज की स्थापना की तथा 1872 ई. में एक कृषि विभाग की स्थापना की।

436. (d) लार्ड मेयो पहला भारतीय गवर्नर जनरल था जिसकी हत्या उसके ऑफिस में की गई थी। इसकी हत्या 1872 ई. में एक अफगान द्वारा चाकू मार कर की गई थी। इसी के शासन काल (1869–72 ई.) में 1872 ई. में पहली बार प्रायोगिक जनगणना करवाई गई जो रिपन के काल (1880–84 ई.) में नियमित रूप से शुरू हो गई।

437. (c) लार्ड नार्थब्रुक के काल में पंजाब में प्रसिद्ध कूका आन्दोलन हुआ था। नार्थब्रुक ने अफगानिस्तान के संदर्भ में अहस्तक्षेप नीति का पालन किया। इसके साथ उसने बड़ौदा के मल्हाराव गायकवाड़ को भ्रष्टाचार के आरोप में पदच्युत कर मद्रास भेज दिया। 1873 ई. में इसने घोषणा की कि 'मेरा उद्देश्य करों को हटाना तथा अनावश्यक वैधानिक कार्यवाहियों को बंद करना है'।

438. (b) लार्ड नार्थब्रुक ने अफगानिस्तान के संदर्भ में अहस्तक्षेप की नीति का पालन किया। परन्तु जब गृह सरकार ने अफगानिस्तान में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट रखना चाहा तो नार्थब्रुक ने इस नीति के विरोध में अपना त्यागपत्र 1876 ई. को दे दिया। इसी के समय स्वेज नहर खुल जाने से ब्रिटेन तथा भारत के मध्य व्यापार में वृद्धि हुई।

439. (b) लार्ड नार्थब्रुक के शासनकाल में प्रिंस ऑफ वेल्स जो बाद में एडवर्ड सप्तम के नाम से प्रसिद्ध हुए, का भारत में आगमन हुआ था।

440. (c) ब्रिटेन में बेंजामिन डिजरायली की कंजरवेटिव सरकार का भारत में प्रतिनिधि लार्ड लिटन था। इसके काल में ब्रिटिश संसद ने शाही उपाधि अधिनियम पारित करके साम्राज्ञी विक्टोरिया को कैसर-ए-हिन्द (भारत की महा साम्राज्ञी) की उपाधि से सम्मानित किया। इसके लिए 1 जनवरी, 1877 ई. को दिल्ली में एक भव्य दरबार का आयोजन भी किया गया।

441. (a) लार्ड लिटन के काल में आयी भयंकर अकाल तथा जनता में त्राहीमाम की घटना का भारतीय समाचार पत्रों ने खूब प्रचार-प्रसार किया। इससे क्रोधित होकर लिटन ने इन समाचार पत्रों के गला घोंटने के लिए भारतीय भाषा प्रेस अधिनियम (वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम) पारित किया, जिसके तहत मजिस्ट्रेटों को यह आदेश दिया गया कि वे भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले समाचार-पत्रों के प्रकाशकों से इस बात का लिखित आश्वासन लें कि वे किसी ऐसी सामग्री का प्रकाशन नहीं करेंगे, जिससे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असन्तोष पैदा हो।

442. (d) भारत के गवर्नर जनरल तथा वायसराय लार्ड लिटन एक प्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार और लेखकार होने के बावजूद भारतीय मामलों में बहुत प्रतिक्रियावादी और दमनशील थे। उसे साहित्य के इतिहास में ओवन मैरिडिथ (Owen Meredith) के नाम से जाना जाता है।

443. (b) लार्ड लिटन के कार्यकाल में 1876-78 ई. के मध्य बम्बई, मद्रास, हैदराबाद, पंजाब, मध्य भारत आदि क्षेत्रों में भीषण अकाल पड़ा। लिटन ने अकाल के स्वरूप की जाँच के लिए रिचर्ड स्ट्रेची की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग गठन किया। आयोग ने असमर्थ व्यक्तियों की सहायता के लिए

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2020/4/2 12:37

प्रत्येक जिले में एक अकाल कोष खोलने का सुझाव दिया।

444. (d)

445. (d) लार्ड लिटन के काल में भारतीय शस्त्र अधिनियम पारित किया गया जिसके तहत बिना लाइसेन्स के हथियार रखने या लेकर चलने को दण्डनीय अपराध माना गया। साथ में यह भी बात कही गयी, कि यूरोपियन, एँलो-इण्डियन तथा कुछ विशेष श्रेणी के सरकारी कर्मचारी इस अधिनियम के अनुपालन से मुक्त हैं। लिटन ने भारतीयों को उच्च प्रशासनिक सेवाओं में प्रवेश बंद करने के उद्देश्य से प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रवेश के लिए अधिकतम आयु सीमा 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया। ज्ञातव्य हो कि 1833 के चार्टर एक्ट के द्वारा कम्पनी के अधीन उच्च-प्रशासकीय सेवाओं में चयन के लिए लंदन में प्रतियोगी परीक्षाओं के आयोजन का प्रावधान रखा गया था।

446. (b) जब रिपन भारत में वायसराय बनकर आया उस समय ब्रिटेन में ग्लैड्स्टोन के नेतृत्व में उदारवादी पार्टी (लिबरल पार्टी) शासन व्यवस्था संभाले हुए थी। फलस्वरूप वहाँ की सरकार ने एक उदारवादी रिपन को भारत का वायसराय बनाया। रिपन के काल में ही कारखानों में श्रमिकों की स्थिति सुधारने के लिए पहली बार 1881 ई. का फैक्ट्री अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम के तहत भारतीय कारखाना-मजदूरों की सेवा की स्थितियों को नियमित करने तथा सुधारने का प्रयास किया गया। इसी के शासन काल में भारतीय भाषा प्रसार अधिनियम 1878 समाप्त कर दिया गया।

447. (b) स्थानीय स्वशासन के जनक लार्ड रिपन ने 1883-85 ई. के दौरान विभिन्न प्रान्तों में स्थानीय स्वशासन अधिनियम पारित किया। शहरी एवं ग्रामीण निकायों की स्थापना की गई। इस स्थानीय स्वशासन का जितना अधिक लाभ प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण एवं उसकी सक्षमता के रूप में नहीं हुआ जितना कि भारतीय जनता के राजनीतिक प्रशिक्षण के रूप में हुआ। इसने लार्ड मेयो द्वारा शुरू किए गए वित्तीय विकेन्द्रीकरण को और अधिक व्यापक बनाया तथा राजस्व के संसाधनों को तीन श्रेणियों अर्थात् केन्द्रीय, प्रान्तीय और [illegible] से विभाजित किया गया।

448. (a)

449. (a) उदारवादी रिपन शिक्षा में व्यापक रूप से सुधार के लिए विलियम हण्टर के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया जिसने 1882 ई. में अपनी रिपोर्ट ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया की सरकार को सौंपी। रिपोर्ट में प्राइमरी तथा माध्यमिक स्कूली शिक्षा की उपेक्षा की बात कही गई। इस रिपोर्ट में यह व्यवस्था की गई कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा का अधिकार लोकल बोर्डों एवं म्यूनिसिपल बोर्डों को दिया जाय तथा शिक्षा संस्थाओं पर से सरकारी नियंत्रण को हटा दिया जाय।

450. (d) लार्ड रिपन के गौरवपूर्ण शासनकाल का अन्त इलबर्ट बिल विवाद के साथ हुआ। इस बिल के तहत प्रारम्भ में यह व्यवस्था थी कि जाति-भेद पर आधारित प्रत्येक नागरिक के मध्य उपजे भेदभाव को समाप्त किया जाय। इस बिल में भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय मुकदमों को सुनने का अधिकार दिया गया। इस बिल का यूरोपीय लोगों, विशेषत: भारत के अंग्रेजी समुदाय द्वारा कटु आलोचना की गई। अन्तत: यूरोपीय समुदाय के दबाव में बिल को संशोधित किया गया। संशोधन के पश्चात् इस अधिनियम में यह व्यवस्था की गई कि भारतीय न्यायाधीश यूरोपीय न्यायाधीश के सहयोग से मुकदमों का निर्णय करेंगे। इस विधेयक के विरोध में अंग्रेजों द्वारा किये गये विद्रोह को श्वेत विद्रोह की संज्ञा दी जाती है।

451. (d) लार्ड विलियम बैंटिक के शासनकाल में कुप्रशासन के आधार पर मैसूर राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया था, परन्तु लार्ड रिपन ने भारतीय इतिहास में एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए उसके पुराने शासक राजवंश को पचास वर्ष पश्चात् शासन वापस कर दिया। इसके इन्हीं सभी कृत्यों के लिए भारतीय लोग इसे सज्जन रिपन के रूप में याद करते हैं तथा इसके शासनकाल को भारत में स्वर्णयुग का आरम्भ माना जाता है।

452. (d)

453. (d)

454. (d)

455. (a) इण्डियन काउन्सिल एक्ट 1892 ई. का पारित होना एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाती है। इस एक्ट के माध्यम से भारतीय संविधान [illegible] की दिशा में

पहला कदम उठाय[illegible]
निर्माण की दिशा [illegible]
अधिनियम को भा[illegible]
पारित किया गया [illegible]
अपनी स्थापना के [illegible]
दिया था। इस एक्ट [illegible]
कौंसिल में भारतीय[illegible]

456. (a) साम्राज्यवादी [illegible]
लैन्सडाउन के काल [illegible]
भेजा गया, जिनके [illegible]
अफगानिस्तान के [illegible]
डूरण्ड लाइन के [illegible]
अतिरिक्त लैन्सडा[illegible]
ई. में दूसरा फैक्ट्री [illegible]
11 घंटे प्रतिदिन से [illegible]
कर दिया गया।

457. (d) वाइसराय तथा [illegible]
शासनकाल में 189[illegible]
भाग एक भयंकर [illegible]
इस अकाल के उप[illegible]
के लिए लायल [illegible]

458. (c)

459. (c) लार्ड कर्जन [illegible]
नीतियों का नग्न प्र[illegible]
जातियों के विद्रोहों [illegible]
का अनुसरण तथा [illegible]
गठन किया। कर्जन [illegible]
की योजनाओं को [illegible]
अभियान कर्नल य[illegible]
ल्हासा तक आगे ब[illegible]
तिब्बत पर युद्ध के [illegible]
चुम्बी घाटी पर 7[illegible]
द्वारा अधिकार कर [illegible]

460. (b) लार्ड कर्जन ने [illegible]
व्यवस्था की जाँच [illegible]
में एक पुलिस आय[illegible]
ने पुलिस बल को [illegible]
दूर, प्रशिक्षण एवं [illegible]
दमनपूर्ण बताया। स[illegible]
प्रान्तों में पुलिस बल [illegible]

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2020/4/2 12:37

बी. ए. I (द्वितीय प्रश्नपत्र (यूरोप का इतिहास)

① पुनर्जागरण के कारण क्या थे-
(1) धार्मिक युद्ध ② व्यापारिक विकास ③ कुस्तुनतुनिया का पतन
④ मंगोल साम्राज्य का योगदान ⑤ सामन्तवाद का पतन

उत्तर - उपर्युक्त सभी। (धार्मिक युद्ध जो येरूशलम के लेकर मुस्लिम एवम् ईसाईयों के बीच लड़ा गया अतः यूरोप से प्रकाशित पूर्व के लोगों से यूरोपियन सम्पर्क में आये। बाइजेंटाइन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया का 1453 में पतन हो गया अतः वहाँ का बुद्धिजीवि- वर्ग इटली, जर्मनी आदि देशों में बस गये जिन्होंने ज्ञान का प्रसार किया। मंगोलशासक कुबलाई खाँ द्वारा अपने दरबार में देश-विदेश के विद्वानों तथा व्यापारियों के समा करने से संकुचित मानसिकता का अन्त हुआ।

② पुनर्जागरण काल में ईसाई धर्म का केन्द्र तथा पोप का निवास स्थल कहाँ पर था -
① रोम ② कुस्तुनतुनिया ③ ब्रिटेन ④ जर्मनी

उत्तर - रोम - यह ईसाई धर्म का केन्द्र था।

③ प्रसिद्ध कवि दांते किस देश का निवासी था -
① इटली ② फ्रांस ③ जर्मनी ④ ब्रिटेन

उत्तर - दांते इटली का रहने वाला था। पेट्रार्क को मानवतावाद का जनक और मैकियावली की कृति 'द प्रिंस' थी। एरासमस ने 'प्रेज ऑफ फॉली' के माध्यम से चर्च पर की बुराइयों पर प्रहार किया। कोपरनिकस ने यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है

जाता है। 1909 ई. के संवैधानिक सुधार में पहली बार बाँटों और राज्य करो के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए, मुसलमानों को पृथक निर्वाचक मण्डल प्रदान किया गया तथा इस संवैधानिक सुधार के माध्यम से ही संशोधित विधायिकाओं में मुसलमानों को विशेष अधिकार प्रदान किए गये।

473. (c)

474. (d) लार्ड हार्डिंग द्वितीय का भारत में सबसे अधिक दीर्घकाल (1910–1916 ई.) रहा था। इसके कार्यकाल में ब्रिटेन के राजा जार्ज पंचम का भारत में आगमन 12 दिसम्बर, 1911 ई. में हुआ। इस उपलक्ष्य में दिल्ली में 1911 ई. में एक भव्य दरबार का आयोजन किया गया। इसी दरबार में बंगाल विभाजन को रद्द करने तथा भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया गया। 23 दिसम्बर, 1912 ई. को दिल्ली में राजधानी स्थानान्तरण के औपचारिक समारोह के अवसर पर जब हार्डिंग द्वितीय जलूस के साथ दिल्ली में प्रवेश कर रहे थे तब उन पर चाँदनी चौक के पास बम फेंका गया जिसमें वे घायल हो गये। इसी शासनकाल में 4 अगस्त, 1914 ई. को प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई थी।

475. (d) लार्ड हार्डिंग द्वितीय के शासनकाल में फिरोजशाह मेहता ने बम्बई क्रॉनिकल का तथा गणेश शंकर विद्यार्थी ने प्रताप नामक उग्रवादी राष्ट्रव्यापी पत्रिका का प्रकाशन किया। इसी के काल में सैन फ्रैंसिस्को में गदर पार्टी का गठन किया गया। इसके अतिरिक्त सितम्बर, 1915 ई. में श्रीमती एनी बेसेन्ट ने होम रूल लीग की स्थापना की। 1916 ई. में लार्ड हार्डिंग को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का कुलाधिपति नियुक्त किया गया। इसी के काल में दो महान राष्ट्रवादी नेताओं गोखले तथा फिरोजशाह मेहता का निधन हो गया।

REDMI NOTE 7 PRO
AI DUAL CAMERA
2020/4/2 12:38

① शंसबानी वंश का मुहम्मद बिन साम का साम्राज्य उत्तर-पश्चिम अफगानिस्तान था।

② गोरी एवम् पृथ्वीराज चौहान के मध्य 1191 में तराइन का प्रथम युद्ध हुआ जिसमें गोरी की पराजय हुई

③ 1192 ई. में तराइन का द्वितीय युद्ध हुआ जिसमें पृथ्वीराज चौहान पराजित हुआ

④ 1194 ई. में चन्दावर में गोरी एवम् जयचन्द के मध्य युद्ध हुआ जिसमें जयचन्द पराजित हुआ

⑤ 1206 में मुहम्मद गोरी की मृत्यु के उपरान्त कुतुबुद्दीन ऐबक ने लाहौर में तुर्क राज्य स्थापित किया। और मामलूक वंश की स्थापना हुई। (जिसका अर्थ (मामलूक) होता है स्वतंत्र माता पिता से उत्पन्न दास)।

⑥ ऐबक ने मलिक और सिपहसालार की पदवी धारण की न कि सुल्तान की। 1208 में गियासुद्दीन (मुहम्मद गोरी के उत्तराधिकारी) ने ऐबक को सुल्तान स्वीकार किया

⑦ ऐबक ने अपने विद्रोहियों को शान्त करने के लिये वैवाहिक सम्बन्धों को आधार बनाया उसने गजनी के शासक एल्दौज से पुत्री का विवाह, मुल्तान एवम् सिन्ध के शासक नासिरुद्दीन कुबाचा से अपनी बहन का विवाह और इल्तुतमिश से पुत्री का विवाह किया।

REDMI NOTE 7 PRO
48MP DUAL CAMERA
2020/4/20 14:00

भारत का इतिहास
(बी.ए. I, II एवम् III के लिये उपयोगी)

मध्य एशियाई लेखक अलबेरूनी ने किताब-उल-हिन्द अरबी भाषा में लिखी। उसने भारतीय सामाजिक विशेषता अर्थात जाति प्रथा का विस्तार से वर्णन किया है।

① भारत पर प्रथम मुस्लिम आक्रमण कब और किसने किया
उत्तर- ईराक (अरब) के मुहम्मद बिन कासिम ने 712 ई. में सिन्ध प्रान्त पर सफल अभियान किया (पहिरकेहस्क)

② अरब-हिन्द प्रभाव- भारतीय खगोलशास्त्र से प्रभावित होकर अल-फजरी की किताब-उल-जिज लिखी गई।
अरब शासन का उल्लेख चचनामा में मिलता है।

③ मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्धवासियों से जजिया नामक कर की पहली बार वसूली की। दिरहम नामक सिक्के, ऊँट पालने एवम खजूर की खेती का प्रचलन आरम्भ किया

④ भारत में प्रथम तुर्की आक्रमणकारी सुबुक्तगीन था जोकि गजनी का शासक था।

⑤ सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला महमूद पहला तुर्क शासक था जिसने बगदाद के खलीफा से प्रतिवर्ष भारत पर एक बार आक्रमण करने की प्रतिज्ञा की थी। महमूद ने 1001 से 1026 तक भारत पर 17 बार आक्रमण किया। उसने जेहाद का नारा दिया और अपना नाम बुत शिकस्त रखा।